ये है बुन्देलखण्ड

भाग-चार

सम्पादक

लक्ष्मी पाण्डेय

परामर्श

सुरेश आचार्य

डॉ0 निरंजन कुमार यादव
असि0 प्रोफेसर हिंदी
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर

अनुज्ञा

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा सम्पादक/सम्पादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN 978-93-89341-80-5

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 900 रुपये

आवरण

असरार अहमद, सागर

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

YE HAI BUNDELKHAND (Part-IV) *edited by* Dr. Laxmi Pandey

चाँद पुराना रात नयी है : हमीरपुर

डॉ. निरंजन कुमार यादव

भारत प्राकृतिक विविधता वाला देश है। यह अपनी खूबियों और खामियों के साथ भरपूर जीवन वाला। सदैव खुशियों एवं उत्साह से लबरेज रहने वाला। जीवन के कठिन-से-कठिन समय का डटकर मुकाबला करने वाला। रंग-बिरंगी उत्सव धर्मी, सौन्दर्य और प्रेम से भरा। सबसे अलग और सबसे खास। इसका कोई शानी नहीं। यहाँ एक तरफ रेत होती धरती है तो दूसरी तरफ हरियाली से ढकी एवं फसलों से लहलहाती धरती। यदि यहाँ एक तरफ ऊँचे-ऊँचे शान्त, स्थिर, स्निग्ध पर्वत श्रृंखलाएँ हैं तो दूसरी तरफ गर्जन करता एवं मस्ती से हिलोरे लेता महासागर भी है। अद्भुत है। यह अपना भारत देश। अक्षुण्ण सौन्दर्य से भरा! अतीव सुन्दर एवं मनमोहक! यहाँ पर सभी प्रकार की जलवायु एवं भौगोलिक दशाएँ एक छोर से दूसरे छोर तक मिल जाती हैं। अपने इस देश में प्रकृति और मानव निर्मित खूबसूरती का आगार है जिसको देखने के साथ-साथ महसूस भी किया जा सकता है। भारत का कोई भी ऐसा हिस्सा नहीं है जो आपके दिल को ना छू ले। पहली नजर में खराब-से-खराब लगने वाली जगह भी कब आपकी संवेदना को छू लेगी इसका आपको पता भी नहीं चलेगा। यहाँ हर एक जगह का अपना इतिहास है और उससे जुड़ी कथाएँ एवं किंवदन्तियाँ हैं। आप थोड़ी-सी उसमें दिलचस्पी दिखाइए तो आप अपने को उससे जुड़ा महसूस करेंगे। यह सिर्फ इस देश की मिट्टी की खूबसूरती है कि हम जहाँ जाते हैं वहीं के हो जाते हैं।

हमीरपुर चित्रकूटधाम मंडल के अन्तर्गत आने वाला उत्तरप्रदेश राज्य का एक छोटा-सा जनपद है। जिसका मुख्यालय यमुना और बेतवा के दोआब में स्थित हमीरपुर शहर है। इस शहर का अपना एक ऐतिहासिक महत्व है। अब भी आपको यहाँ हाथी दरवाजा एवं यमुना नदी में डूबे राजा हम्मीर देव के महल के मलबे के रूप में ग्यारहवीं शताब्दी के भग्नावशेष देखने को मिल जाएँगे। सुभाष बाजार में स्थित सोफिया गेट के माध्यम से आप अंग्रेजी हुकूमत की कभी ना

शब्द को चरितार्थ किया था। 13 सितम्बर, सन् 1984 को स्वामी जी अपना पार्थिव शरीर त्यागकर ब्रह्मलीन हो गए।

जहाँ पर केन, बेतवा, यमुना कल-कल निनाद कर प्रवाहित हो रही हों वहाँ साँस्कृतिक एवं साहित्यिक परम्परा की जड़ें कितनी गहरी होंगी? यह सोचकर ही मन प्रफुल्लित हो उठता है...।

सन्दर्भ

1. गुप्ता, लक्ष्मण प्रसाद, 'जिसे वे बचा देखना चाहते हैं'(2015), अन्तिका प्रकाशन, ग़ाज़ियाबाद, पृ. 26।
2. हमीरपुर गजेटियर, पृ. 05।
3. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (2008), प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, पृ. 37।
4. बैरागी, कुँवर, 'प्यासे केन के फूल' (2016), पृ. 33।
5. कौशल, बीबा सिंह, 'न्यू राष्ट्रीय स्कूल एटलस' (2013), इंडियन ब्रुक डिपो, न्यू दिल्ली, पृ. 83।
6. त्रिपाठी केशरी नन्दन, 'उत्तरप्रदेश'(2020), बौद्धिक प्रकाशन, इलाहबाद, पृ. 27-132।
7. मयंक, मंजुल, 'तुन ना आए सितारों को नींद आ गई' (2009) सं. डॉ. सुरेन्द्र प्रताप सिंह, आराधना ब्रदर्स प्रकाशन, गोविन्द नगर कानपुर, पृ. 152।
8. सिंह, शुकदेव एवं वासुदेव, 'कबीर वाङ्मय', विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी, पृ. 26।
9. Apnabharuwasumerpur.blogspot.com/2010
10. www. en.m.wikipedia.org/wiki/rath, _india
11. www.up24.news/hamirpur/uncategorized/pandit-parmanand-a-brave-fighter-for-indian-freedom/
12. www.patrika.com/agra-news/swami-brahmanand-lodhi-full-profile-in-hindi-5452977/

पता– असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाज़ीपुर, (उ.प्र.)
मो. 8726374017

(डॉ. सुरेन्द्र प्रताप सिंह, डाक कर्मी भाई अंशुमान पाठक, जिनके सानिध्य से हमीरपुर गज़ेटियर की जानकारी मिली पूर्व लिपिक एवं साहित्यकार कुँवर बैरागी, जीवन संगिनी प्रिया और सभी हमीरपुर के अनाम लोग जिनसे इस लेख को लिखने में मदद मिली, उन सबके प्रति हृदय की अतल गहराइयों से आभार)